हिंदी साहित्य में है सृजनात्मक लेखन

अशोक माहेश्वरी|Jan 15, 2012, 00:11AM IST

हमारे देश में इस समय इंग्लिश में तो चेतन भगत, तुषार रहेजा जैसे अनेक युवा, लेखन कर रहे हैं, लेकिन हिंदी साहित्य में युवा लेखक अपेक्षाकृत कम आ रहे हैं। जाहिर है ऐसा होने के पीछे कुछ कारण भी हैं। मुझे लगता है इसकी सबसे अहम वजह शिक्षा का माध्यम है। वर्तमान में हमारी शिक्षा पद्धति हिंदी की बजाय, अंग्रेजी में ज्यादा हो रही है। इसके चलते हिंदी में लेखन कम होने लगा है।

लोग जिस माध्यम से शिक्षा पाते हैं, उनकी विचार प्रक्रिया भी उसी के अनुसार काम करने लगती है। बोलचाल की बात हो या लेखन की.. सामान्यत: लोग अपनी मातृभाषा में ही ज्यादा अनुकूलता के साथ व्यवहार कर पाते हैं। ऐसा नहीं है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में योग्यता की कमी हो।

सच तो यह है कि तुलनात्मक रूप से पठन-पाठन में रुचि ही कम हो गई है। वर्तमान युवा वर्ग का ध्यान करियर की तरफ ज्यादा है। पहले बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के अलावा दूसरी पुस्तकों को पढ़ने के लिए भी प्रेरित किया जाता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब तो सब-कुछ करियर के नजरिए से ही तय हो रहा है।

चूंकि साहित्य में अन्य क्षेत्रों की तुलना में स्थापित होने में ज्यादा समय लगता है, इसलिए भी युवा वर्ग इस ओर ध्यान देने की बजाय, अन्य क्षेत्रों की चकाचौंध की तरफ आकर्षित हो रहे हैं।

यह भी माना जा रहा है कि वर्तमान में साहित्य क्षेत्र में बाजारवाद हावी है और लेखक बंधी-बंधाई लीक (फामरूला-आधारित) पर काम कर रहे हैं। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं। हकीकत यह है कि हिंदी में वर्तमान दौर में अनेक लेखकों द्वारा सृजनात्मक साहित्य रचा जा रहा है। किसी भी भाषा में अब तक शायद इस तरह की किताबें नहीं आई हैं। वैसे इन दिनों ज्यादातर साहित्य स्त्री-पुरुष संबंधों और शहरी जीवन पर आधारित है, गांव कहीं पीछे छूट रहा है।
दरअसल, पहले प्रेमचंद जैसे अनेक लेखक गांवों से ताल्लुक रखते थे, लिहाजा उनके लेखन में भी ग्रामीण जीवन झलकता था।
जिस साहित्य में सृजनशीलता है,रचनाधर्मिता है,उसे सृजनात्मक साहित्य कहते हैं।